बदलते मौसम के परिपेक्ष में सोयाबीन की फसल में में स्मार्ट कीट एवं रोग प्रबंधन के तरीको को अपनाये

इंदौर स्थित भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डॉ बी. यू. दुपारे से प्राप्त जानकारी के अनुसार संस्थान द्वारा आगामी खरीफ के मौसम के लिए पूर्वतयारी के रूप में दिनांक 18-21 मई 2021 के दौरान आयोजित चार दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन किया जा रहा हैं जिसमे प्रमुख सोयाबीन उत्पादक राज्यों के कृषि विज्ञान केंद्रों, राज्य कृषि विभागों के साथ-साथ कृषि विश्वविद्यालयों से संबंधित लगभग 160 से अधिक वैज्ञानिक और विस्तार कर्मी भाग ले रहे हैं. इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में विशेष रूप से आमंत्रित भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान के पूर्व प्रधान वैज्ञानिक अखिल भारतीय समन्वित सोयाबीन परियोजना के पूर्व प्रभारी डॉ अमर नाथ शमा द्वारा जलवायु परिवर्तन के परिपेक्ष में स्मार्ट कीट प्रबंधन (सीएसपीएम) पर जानकारी दी गई। डॉ. शर्मा ने इस अवसर पर बताया की बदलते मौसम के साथ कीड़ो की रहन-सहन तथा उनके व्यव्हार में भी बदल देखा जा रहा है. अतः उन्होंने इस बात बात पर जोर दिया कि मौसम में बदलाव की बारीकी से निगरानी की जानी चाहिए जिसके परिणामस्वरूप कीड़ों के व्यवहार में बदलाव आ रहा हैं. उन्होंने यह भी बताया कि अनुशंसित बीज दर का पालन, कीट प्रतिरोधी या सहनशील किस्मों का प्रयोग, सोयाबीन की 12 कतारों के बाद 2 कतारों में सुवा जैसी ट्रैप फसलों की खेती को बढ़ावा देना चाहिए जिससे सुवा की फसल में कीटों का अधिक आक्रमण होकर सोयाबीन की फसल में कीट नियंत्रण के लिए लागत में कमी ला सकते हैं। साथ ही उन्होंने जलवायु अनुरूप कीट प्रबंधन तरीकों को बढ़ावा देने के लिए, बैक्टीरिया, कवक और वायरस के आधार पर माइक्रोबियल कीड़ों के प्रयोग करने की वकालत की। डॉ. शर्मा ने इस अवसर पर केवल उन कीटनाशकों का उपयोग करने के लिए आगाह किया, जो सोयाबीन के लिए अनुशंसित और पंजीकृत हैं.

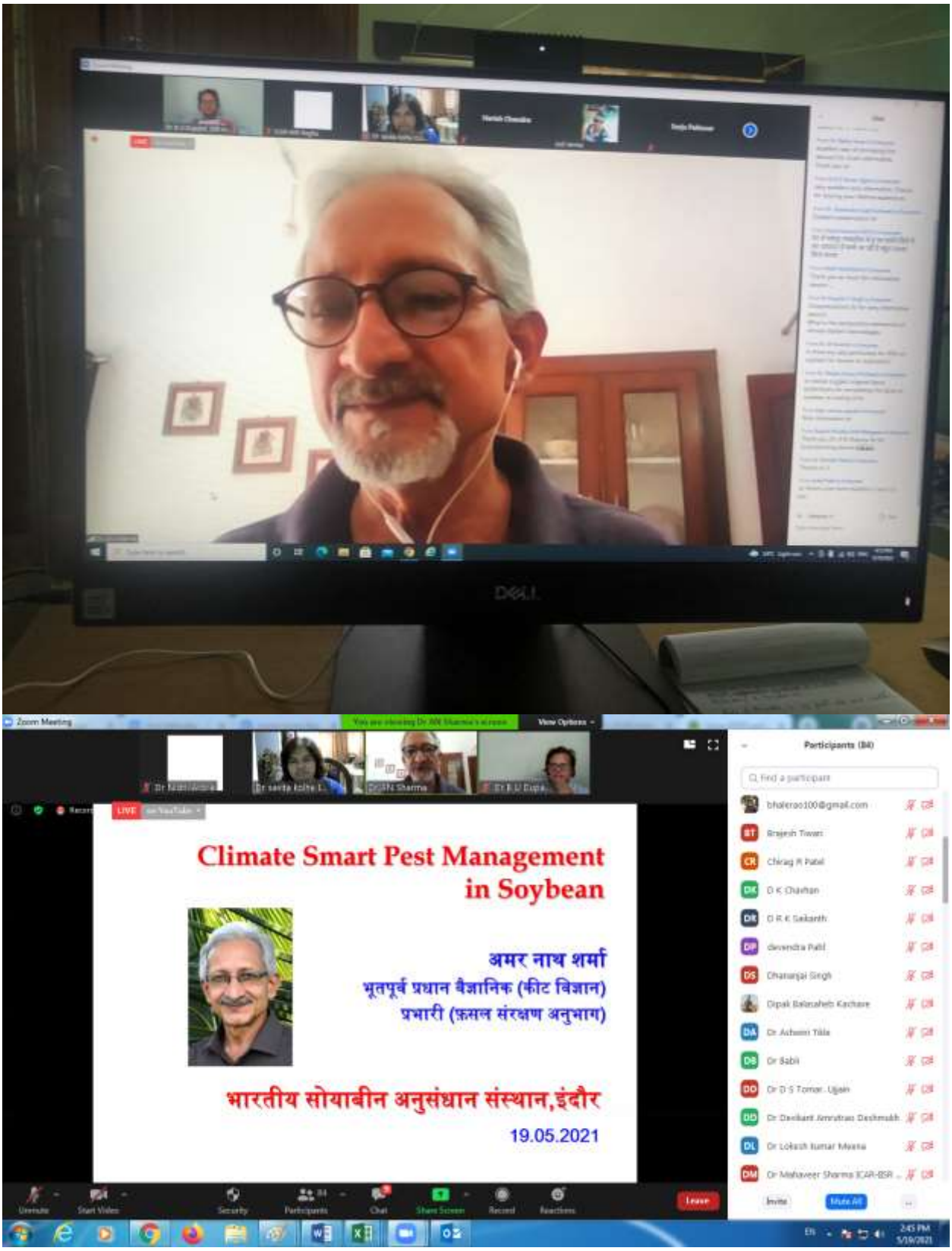
Climate Smart Pest Management
in Soybean
अमर नाथ शर्मा
भूतपूर्व प्रधान वैज्ञानिक (कीट विज्ञान)
प्रभारी (फ़सल संरक्षण अनुभाग)
भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान,इंदौर
19.05.2021
Participants (84)

इससे पूर्व डॉ. लक्ष्मण सिंह राजपूत, वैज्ञानिक पादप रोग विज्ञान, भाकृअनुप-आईआईएसआर, इंदौर ने प्रतिकूल मौसम के कारण विगत दो वर्षो से आ रही परिस्थिति में रोगों से हो रहे फसल के नुकसान को कम करने के लिए दी गयी अनुशंसा है: कृषकगन सोयाबीन की बोवनी से पूर्व अनुसंशित फफूंदनाशकों से बीजोपचार जैसे कार्बोक्सिन 37.5% + थीरम 37.5% या थिरम + कार्बेन्डाजिम (2: 1 जैसे अनुशंसित कवकनाशी) दोनों 3 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से या नए मिश्रित कवकनाशी जैसे पेनफ्लुफेन + ट्राइफ्लॉक्सीस्ट्रोबाइन 38 एफएस @ 1 मिली/किलोग्राम बीज की दर से भी प्रयोग कर सकते हैं। उन्होंने किसानों से हाल ही में जारी किस्मों के अंतर्गत क्षेत्र को बढ़ाने एवं रोगों के प्रति संवेदनशील किस्मे जैसे जेएस 95-60 या वह किस्मे जो सोयाबीन अनुसन्धान एवं विकास प्रणाली की अनुसंशा की प्रक्रिया के बाहर से आई हैं.

एक अन्य सत्र में डॉ. लोकेश कुमार मीणा, वैज्ञानिक (कीट विज्ञान) ने बताया की बदलती हुयी जलवायु परिवर्तन की के परिदृश्य में सोयाबीन उत्पादन के प्रमुख हानिकारण कीट जैसे तम्बाकू कैटरपिलर, स्टेम फ्लाई, गर्डल बीटल, पॉड बोरर, सेमीलूपर्स और सफेद ग्रब को नियंत्रित करने के लिए कीड़ों की अवस्था जैसे अंडे, लार्वा, प्यूपा और वयस्कों जैसे विभिन्न चरणों में इन कीटों के बाहरी लक्षणों से पहचान कर अनुशंसित विधियों जैसे भौतिक, जैविक, यांत्रिक और रासायनिक नियंत्रण उपायों के उपयोग से नियंत्रण करने की सलाह दी. जबकि डॉ. महावीर प्रसाद शर्मा, प्रधान वैज्ञानिक (सूक्ष्म जीव विज्ञान) और प्रमुख, फसल संरक्षण विभाग ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के तकनिकी सत्र में बताया कि वर्तमान में पुराने माइक्रोबियल स्ट्रेन बाजार में उपलब्ध हैं

जो वर्त्तमान में सोयाबीन की बीज श्रंखला में उपलब्ध प्रजातियों में संश्लेषण करने में उपयोगी नहीं हैं। इसलिए उन्होंने किसानों द्वारा उगाई जाने वाली लोकप्रिय किस्मों के अनुरूप नए माइक्रोबियल स्ट्रेनो की बाजार में उपलब्धता के लिए प्रयास किये जाने की आवश्यकता दर्शाई ।